International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

वाल्मीकि रामायण में रस निरूपण

डॉ स वता व शष्ट
अ सस्टेंट प्रोफेसर एवं वभागाध्यक्ष संस्कृत वभाग
जैन कन्या पाठशाला स्नातकोत्तर महा वद्यालय मुजफ्फरनगर

सार

काव्यतत्त्वों की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण अद्वितीय महाकाव्य है। अतएव विद्वानों ने इसे संस्कृत काव्यों की परिभाषा का आधार मानकर कतिपय लक्षणग्रन्थों का निर्माण किया है। महर्षि वाल्मीकि ने ऐसे समय में ग्रन्थ–रचना की जब उनके सम्मुख ऐसी कोई रचना नहीं थी, जो उनका पथ–प्रद"ाक कर सके। पुनरपि उन्होंने अपनी इस मौलिक कृति में प्रकृति–चित्रण, संवाद–संयोजन, विषय प्रतिपादन के साथ–साथ रस, अलंकारादि अन्यान्य काव्यीय तत्त्वों का यथा स्थान वर्णन करके परवर्ती आचार्यों का मार्ग प्र"ास्त किया है। काव्य का परमार्थतः प्रयोजन रसास्वादमूलक आनन्दाति"ाय माना गया है। वाल्मीकि ने भी करुण रस रूपी आनन्द से प्रेरित होकर ग्रन्थ रचना की। यद्यपि आलोचक इस ग्रन्थ–रत्न में करुण रस के प्राधान्य को स्वीकारते हैं। लेकिन रस तत्त्व के सन्दर्भ में वाल्मीकि रामायण में वीरादि रसों के साथ प्रधानतः करुण रस ही आदि से लेकर अन्त तक सर्वत्र विद्यमान है।

प्रस्तावना

संस्कृत जगत में वाल्मीकि कृत रामायण आदि काव्य और महर्षि वाल्मीकि आदिकवि के रूप में विख्यात है। आदिकाव्य रामायण रामचरित पर आधारित, परवर्ती काव्यकारों और नाटककारों के काव्यौं का उपजीव्य ग्रन्थ ही नहीं अपितु भरतीयौं का आद्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तत्त्व एवं आचार–विचार, मैत्री भवना, आद"ा और उदारता का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इन सबके चिरस्थायी रूप के द"ान वाल्मीकि रामायण मे ही मिलते हैं।

रामायण कथा भारतीय जनमानस में इतनुली–मिली है कि इससे अलग भारतीय की अस्तित्त्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है–

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरित"च महीतलें

तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यतिं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

आदिकवि वाल्मीकि–रामायण को करुण रस का प्रथम काव्य स्वीकृत करने में प्रमुख कारण यह है कि इस महाकाव्य की उत्त्पति का प्रैरणास्रोत व्याध के बाण से विधे हुए क्रा४च के लिए बिलखती क्रौ४ची का करुण निनाद ऋषि ने सुना, तौ उनके मुख से सहसा शोक श्लौक रूप में परिणत हौ गया

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शा"वतीः

समाः यत्क्रौ४चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।

भारतीय इतिहास में पूर्व काल से काव्य को आनन्द प्राप्ति का प्रमुख सोत के रूप में माना गया है। काव्य के आनन्द कौ ब्रह्मानन्दसहोदर कि संज्ञा से अंकित किया गया है–

सत्वौद्रैकादखण्डस्वप्रका"ाानन्दचिन्मयः।

वैद्यान्तरस्प"र्ा"ून्यौ ब्रह्मानन्दसहोदरः।

रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य ये 'ाट् सम्प्रदाय काव्यलोचन के सूक्ष्म एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त हैं। रस सिद्धान्त मानवीय भाववैभव एवं साव्रभौम, भावचेतना की अभिव्याक्ति है, जिसके माध्यम से कवि अपनी रागमयी–चेतना कौ वि"वजनीन एवं जीवंत बनाता है।

आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा संवैद्यमानता की रस प्रकिया में वस्तुध्वनि, अलंकारध्वनि, रसध्वनि तीनों सम्मिलित हैं। किन्तु वस्तुध्वनि और अलंकारध्वनि में वौद्धिक व्यायाम की अपेक्षा रहती है जो सभी के सामर्थ्य में नहीं जबकि रसभावादि ध्वनि में चित्तद्रुति का प्राधान्य होने से भावात्मक सौन्दर्य का साम्राज्य रहा करता है।

काव्य में रस ही प्राण तत्व होता है। जीवन में रति एवं प्रेमनामक भाव की बहुलता का प्रभाव देखा जाता है। महाकाव्य में समस्त जीवन का चित्रण होता है और वृंगार का वि"ोष महत्त्व होना उसमें स्वभाविक हैं वृंगार रस संयौग अथवा वियोग के भेद से दो प्रकार का है। वाल्मीकि रामायण में दौनौं प्रकार के भैदौं के द"ान हौते हैं। राम और सीता के आनुराग के प्रथम द"ान उनके विवाहोत्तर कालीन अयोध्या निवास के समय मिलता है। इस स्थल में पाठक कौ वृंगार रस के जिस अलौकिक और सात्त्विक रूप की अनभ ूति होती है, वह अन्यत्र मिलनी दुर्लभ है। राम और सीता विषयक रति अत्याद्धिक मार्मिक परिस्फुट हुइ है जब राम और सीता आ"ोक वाटिका में गमनार्थ उद्यौत होते हैं। 16 वाल्मीकि रामायण में संयौग के साथ वृंगार वियौग की छटायें सछदय कौ अत्यन्त मोहित करने वाली है। विप्रलम्भ का भी रामायण में अनेक"ाः रमणीय रूप मिलता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

वाल्मीकि रामायण में रस निरूपण

रामायण का छठा काण्ड तौ वीर रस से औत प्रोत हुआ प्राप्त मिलता है। यहां पर न केवल राम पक्ष की अभीव्यक्ति हुई बल्कि रावण, मेघनाद, कुम्भकण्र आदि विरुद्ध पक्ष के युद्ध वीरों में भी वीर रस अव्यक्त हुआ है। वाल्मीकि रामायण में न केवल युद्ध वीर अपितु धर्मवीर के भी सुन्दर पद्य मिलते हैं। राजा द"ारथ धर्म और सत्य के पालन में सदैव कत्रव्य निष्ठ हैं।

रौद्र रस एवं वीर रस एक–से प्रतीत होते हैं, लकिन सूक्ष्मता से निरीक्षण करने पर उनका वास्तविक भैद दिखलाई पड़ता है, क्योंकि वीर का स्थायी भाव उत्साह है जबकि रौद्र का क्रोध। वाल्मीकि–रामायण में रौद्र का स्थान यद्यपि गौण है, तथापि कुछ स्थलों पर इसका सुन्दर द"ान हुआ है। रामायण रौद्र रस की अनुभूति सछदसजन को उस समय होती है, जब सीतान्वैषण में राम सुग्रीव की उपेक्षा के कारण उससै कुद्ध होते हैं 26 और अपना कौद्र पूण्र सन्दे"ा देकर लक्ष्मण कौ उसके पास भेजते हैं। लक्ष्मण द्वारा सुग्रीव के प्रति कथन है–'न त्वां रामौ विजानीते सप्रं मडुकराविणम्' इस वाक्य में रौद्र रस का उग्ररूप साकार हो उठा है, जिसमे अतीव सुन्दर व्याग्याश्र निहित है, जो सह्रदय के लिए समझना अत्यन्त सुगम है। इस रस के अन्य उदाहरण ि"ावधनुभ्रंग किये जाने पर पर"ाुराम के क्रोध और केकेयी पर भरत के कौप में प्राप्त मिलते हैं। रामायण में राम जहां सदैव प्रसन्नता, कौमलता और मधुरता से खिले हुए मिलते हैं, वहीं सीता हरणोपरान्त लक्ष्मण से कहते हैं कि अगर देवै"वर मेरी प्राण प्रिया को मुझको लाकर नहीं देंगे तो मैं अपने बाण की मार से तीनौं लोकौं कौ मय्रदा से पतित कर दूंगा। ऐसा कहने पर उनके नेत्र लाल हो गये, होंठुड़कने लगे।

साहित्यिक रसों की संख्या में आचार्य मतैक्य नहीं है तथा वत्सल कौ अलग रस के रूप में कुछ काव्य"ाास्त्री नहीं मानते हैं, लेकिन वैदिक साहित्य में ि"ा"ाुओं के प्रति माता की ममता व्यक्त करना, लौकिक साहित्य में अभिज्ञान"ााकुन्तल में शकुन्तला की विदाई , ि"ा"ाु रघु के लिए राजा दिलीप का स्नेह व्यक्त करना आदि इसके सुन्दर प्रसंग प्राप्त मिलते हैं, जिनके आधार पर यह भासित होता है कि पूर्व काल से ही साहित्य में वत्सलता की रमणीयता से सुन्दर भव्य झांकी प्रस्तुत होती आइ है।

वाल्मीकि जी द्वारा रचित रामायण एक लोकप्रिय महाकाव्य है जिसे भारतीय साहित्य और धर्म दोनों का स्रोत माना जाता है। रामायण एक रोल मॉडल है और कई कार्यों, संस्करणों, कविताओं और नाटकों का स्रोत है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

रामायण के पाठक पहली बार सीता को देखने वाली राम की घटना को कभी नहीं भूल सकते। यह उन दोनों के लिए पहली नजर का प्यार था। सीता जो अपनी बहनों के बीच में थीं, उनकी उपस्थिति से विदा हो गईं, राम के आकर्षण से आकर्षित हुईं और उन्होंने राम का ध्यान आकर्षित करने के लिए पर्याप्त आंदोलन किया। इस अवस्था को श्रीराम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है और यह हमारे दैनिक जीवन में आती है।

सीता के विवाह के बाद सीता को उनकी माता ने राम के चरण स्पर्श करने का आदेश दिया था। लेकिन सीता ने कोई ध्यान नहीं दिया। तब राम ने जानकी की माँ की ओर देखा और मजाक में कहा कि आखिरकार सीता को एक राजकुमारी के रूप में पाला गया था और इसलिए पैर छूना आवश्यक नहीं है, जिस पर सीता ने तुरंत उत्तर दिया ष्प्रभु रामचंद्र मैं आपके पैर इसलिए नहीं छू रही हूँ क्योंकि मैं एक राजकुमारी थी, लेकिन मैं हूँ डर है कि मेरी चूड़ियों में जड़े नवरत्न कहीं अहिल्या की तरह कुमारी न बन जाएं३।" तुरंत मुस्कुराते हुए रामचंद्र ने घोषणा की कि, वह किसी अन्य महिला से विवाह नहीं करेंगे और जीवन भर एकपत्नीव्रत रहेंगे। इस घटना को हास्य कहा जा सकता है और यह उन सभी नैतिक आत्माओं के लिए एक आंख खोलने वाला बन गया है, जिन्होंने प्रभु रामचंद्र की पूजा की थी।

लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, विभीषण और वानर सेना के सैनिकों के साथ राम समुद्र में पहुँचे, उन्हें अपनी वानर सेना के साथ सुरक्षित रूप से समद्र पार करने का रास्ता खोजना पड़ा। राम ने सबसे पहले समुद्र के देवता वरुण की पूजा की, प्रार्थना की कि पानी दूर हो जाए लेकिन उनकी प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया गया। तब क्रोधित राम ने अपना धनुष उठाया और समुद्र में एक तीर चलाया, जिससे सारा पानी सूख गया। इस अवस्था में ऋषि वाल्मीकि राम को रौद्र रूप लेने का वर्णन करते हैं।

जब विभीषण ने अपने बड़े भाई रावण को माता सीता को आत्मसमर्पण करने और राम से क्षमा मांगने की सलाह दी, तो उसे राज्य से बाहर कर दिया गया। इसके साथ ही वह राम के पास जाता है और आश्रय और सुरक्षा मांगता है और उसे प्रभु रामचंद्र ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह इस सिद्धांत को दर्शाता है कि भगवान उन सभी को स्वीकार करते हैं जो पूर्ण समर्पण में उनके गुणों और दोषों की परवाह किए बिना उनके चरणों में शरण लेते हैं। यह त्रुटिपूर्ण मानवता के लिए आशा का संदेश है। वाल्मीकि उल्लेख करते हैं कि राम ने कहा ष्यह मेरा धर्म है, भले ही रावण स्वयं मेरे पास आए, मैं उसे अस्वीकार नहीं करूंगा। यही सच्ची करुणा या दया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

जब रावण ने लगाई हनुमान की पूंछ में आग हनुमान, अपनी धधकती पूंछ के साथ बाहर आते हैं और लंका मे घरों पर उड़ते हैं, लंका के शहर में आग लगाने का मन बना रहे हैं जो कि उनके लिए एकमात्र काम बचा है। विभीषण के निवास को छोड़कर, हनुमान ने पूरे शहर को जला दिया। प्रज्वलित आग को देखकर सभी राक्षस भयभीत हो गए, अपने शहर को अपने पेड़ों, घरों और जीवित प्राणियों के साथ भस्म कर दिया। जलते हुए नगर को देखकर देवता और संगीतकार (गंधर्व) बहुत आनंदित होते हैं। जिस प्रकार अग्नि लकड़ी और तिनके से तृप्त नहीं होती, उसी प्रकार हनुमान कितने भी राक्षसों को मारने में थके नहीं थे। हनुमान द्वारा (उनकी गोद मे) मारे गए राक्षसों की संख्या को प्राप्त करने के लिए पृथ्वी तब थकी नहीं थी। इस वीरतापूर्ण कार्य को विराम कहा जाता है।

परंपरागत रूप से, रामायण का श्रेय वाल्मीकि को दिया जाता है । हिंदू परंपरा इस समझौते में एकमत है कि कविता एक कवि, ऋषि वाल्मीकि , राम के समकालीन और नाटक में एक परिधीय अभिनेता का काम है। कहानी के मूल संस्करण को संस्कृत में वाल्मीकि रामायण के नाम से जाना जाता है।

जिस प्रकार महासमाधि की स्मृति का विचार ही आनंद देता है, उसी प्रकार भगवान श्री राम के आदर्श लक्षण सत्य के संप्रभु मार्ग की मौन उद्घोषणा प्रतीत होते हैं। गरिमा के ऐसे व्यक्तित्व के विशिष्ट गुणों को आत्मसात करना (मर्यादा .) पुरुषोत्तम) व्यक्ति अपने जीवन में इस नश्वर संसार का निर्धारित लक्ष्य अभी प्राप्त कर सकता है।

नम्रता, करुणा, ज्ञान, लक्ष्य, इंद्रियों पर नियंत्रण और मन पर नियंत्रण ये छह सिद्धांत हैं, जो राघवेंद्र राम की महिमा करते हैं।

रंग , चरित्र, लालित्य, कुलीनता, भाग्य, जुनून आदि जैसे सभी भेद राम के संदर्भ में ही चमकते हैं।

नहि वे स्त्रीवधकृते घृणा कार्यों नरोत्तम।

च्तुवर्ण्यहितार्थ हि कर्तव्य राजसूनुना।। (12)

नृषंसमनृषंसं वा प्रजारक्षणकारणात।

पातकं वा सदोषं वा कर्तव्यं रक्षता सदा। (13)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

वाल्मीकि रामायण में, उन्हें ब्राह्मणों के उपासक के रूप में परिभाषित किया गया था – ब्राह्मणों द्वारा पूजा की जाती थी, फिर भी जब ब्राह्मणों द्वारा आहत निर्दोष भवन को न्याय प्रदान करने का सवाल उठा, तो राम को न्याय का साथ दना पड़ा , क्योंकि उनके विचार में, न्याय सर्वोच्च है।

राम धर्म के अवतार हैं। वह एक संत हैं और उनमें सच्ची वीरता है । रावण के मारे जाने के बाद , विभीषण शुरू में दुःख व्यक्त करता है और रावण के गुणों की प्रशंसा करता है , लेकिन जब उसके अंतिम संस्कार का विषय आता है, तो वह सीता –अपहरण आदि जैसे बुरे कर्मों को याद करता है, और अंतिम प्रदर्शन करने के लिए सहमत नहीं होता है। तब श्रीराम उनसे कहते हैं–

मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयाजन।

क्रियतामस्य संकारो ममाप्येष यथा तव।।

निष्कर्ष

जैसे ही कोई "रामायण" को पढ़ता है, उसे एक संवाद कथा प्रस्तुत करने की वाल्मीकि की अंतरंग इच्छा का अनुभव होता है जो दूसरों को उसी तरह प्रेरित कर सकती है जैसे उसने उसे किया था। जब वह संवादों के माध्यम से अपने संदेश को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का लक्ष्य रखता है, तो वह अपनी पूरी रचना में अपनी प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से बनाए रखता है।

शिव और पार्वती के बीच संवाद पाठ की मुख्य रूपरेखा है। "रामायण" में, वाल्मीकि उन पात्रों के मन में कुछ संदेह पैदा करते हैं जो राम की दिव्यता के प्रति प्रेम की तलाश कर रहे हैं।

कछ शंकाओं को दूर करने के लिए संवादों की शुरुआत की जाती है ताकि पात्रों के साथ–साथ दर्शक भी अपने स्वामी से निर्विवाद रूप से प्यार करें। अपने जीवन के अनुभवों के माध्यम से उन्होंने महसूस किया कि यह तभी किया जा सकता है जब वे न केवल संवाद के रूप में बल्कि जनता की भाषा में भी राम की कथा के साथ जुड़ते हैं। इस प्रकार, आत्म–प्रभावकारिता के लिए चुना गया उपकरण उनके सामाजिक परिवेश अवधी की लोकप्रिय बोली थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 12, December- 2020
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

संदर्भ

1 "रामायण" (सटीक)–2–28–2य गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण।

2. संस्कृत–हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे।

3. श्रीविष्णुसहस्रनाम, सानुवाद शांकर भाष्य सहित, गीताप्रेस गोरखपुर,, पृष्ठ–143.

4. ऋग्वेद पदानां अकारादि वर्णक्रमानुक्रमणिका, संपादक– स्वामी विश्वेश्वरानंद एवं नित्यानंद, निर्णय सागर प्रेस, मुंबई, .

5. ऋग्वेदसंहिता (श्रीसायणाचार्य कृत भाष्य एवं भाष्यानुवाद सहित) भाग–5, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, संस्करण–2013, पृष्ठ–3892.

6. हिन्दी साहित्य कोश, भाग–2, संपादक– डॉ० धीरेंद्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण–2011, पृष्ठ–497.